कुण्डलिया

गिरिधरराय

प्रकाशक—(राजा) रामकुमार बुकडिपो, हजरतगंज लखनऊ

मूल्य ।)

श्रीगणेशाय नमः ।

कुण्डलिया ।

गिरधरराय कृत ।

जियबो मरिबो बेउने यह नहिं अपने हाथ। जानत हैं वे नन्दसुत बिहरत बछरुन साथ॥ बिहरत बछरुन साथ चारियुग के रखवारे। इन्द्रमान जिन हर्यो बिपति के काटन हारे॥ कह गिरधर कविराय ज्वाब शाहन से करिबो। आछत सीताराम उमिरि अपनी भरि जियबो॥

१ पुत्र प्राण ते अधिक है चारिउ युग परिमान। सो दशरथ नृप परिहरेउ बचन न दीन्हों जान॥ बचन न दीन्हों जान बड़न की बूझ बड़ाई। बात रहे सो काज और बरु सरबस जाई॥ कह गिरधर कविराय भये नृप दशरथ जैसे। प्राण परिहरे बचन नेक परिहरे न ऐसे॥

२ साईं बेटा बाप के बिगरे भये अकाज। हरणाकश्यप कंस को गयउ दुहुन को राज॥ गयउ दुहुन को राज बाप बेटा में बिगरी। दुश्मन दावागीर हँसे बहु

मण्डल नगरी ॥ कह गिरधर कविराय युगन याही चलि आई। पिता पुत्र के बैर नफा यह कौने पाई ॥

३ बेटा बिगरो बाप सों करि तिरियन को नेहु। लटापटी होने लगी मोहिं जुदा करि देहु ॥ मोहिं जुदा करि देहु घरी मा माया मेरी। लेहों घर अरु बार करौं मैं फजियत तेरी ॥ कह गिरधर कविराय सुनो गदहा के लेटा। समय पर्यो है आय बाप से झगरत बेटा ॥

४ रही न रानी केकई अमर भई यह बात। कवने पुरबल पापते बन पठयो जगतात ॥ बन पठयो जग तात कन्त सुरलोक सिधारेउजेहि । सुत कारन मरेउ राउ नहिं बदन निहारेउ ॥ कह गिरधर कविराय भई यह अकथ कहानी। यश अपयश रह गयउ रही नहिं केकय रानी ॥

५ साईं ऐसे पुत्र से बाँझ रहे बरु नारि। बिगरी बेटे बाप से जाय रहे ससुरारि ॥ जाय रहे ससुरारि नारि के नाम बिकाने। कुल के धरम नशाय और परिवार नशाने ॥ कह गिरधर कविराय मातु झक्खै वहि ठाईं। ऐसे पुत्र न होय बाँझ रहतिउँ बरु साईं ॥

६ नारी अति बल होत है अपने कुल की नाश। कौरव पांडव वंश को कियो द्रौपदी नाश ॥ कियो द्रौपदी नाश केकयी दशरथ मारेउ। राम लषन से पुत्र तेउ बनबास सिधारेउ॥ कह गिरधर कविराय सदा नर रहे दुखारी। सो घर सत्यानाश जहाँ है अतिबलनारी॥

७ मक्कर वाली नारि को मारो ना मिमिआइ। सरिता बोले मोर सो जियत भुवंगे खाइ॥ जियत भुवंगे खाइ मुनिन के जिय तरसावै। कौतुक अपना करै कुँवरि के अंक लगावै॥ कह गिरधर कविराय जैसे खाँड़े की धारा। देखे हृदय बिचारि नारि यह बड़ी मकारा॥

८ नारी परघर जाइ अरे यह भला न माने। जो घर रहे निदान चाल भाषा पहिचाने॥ भाषा चाल पहिचानि बहुरि उत्पात न होई। जो कछु लागे दोष अरे सुन आवे राई॥ कह गिरधर कविराय समय पर देत है गारी। मरा पुरुष जियजान जबै परघर गइ नारी॥

६ काँची रोटी कुचकुची परती माछी बार। फूहर वही सराहिये परुसत टपके लार॥ परुसत टपके लार

झपटि लरिका सौंचावै। चूतर पोंछे हाथ दोऊ कर सिर खजुवाव ॥ कह गिरधर कविराय फूहर के याही धैना। कजरौटा नहिं होइ लुआठे आँजें नैना ॥

१० चिन्ता ज्वाल शरीर बन दावानल लगिजाय। प्रगट धुआँ नहिं देखिये उर अन्तर धुधुआय ॥ उर अंतर धुधुआय जरे जस काँच की भट्ठी। रक्तमांस जरि जाइ रहे पाँजर की ठट्ठी ॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो मिन्ता। वे नर कैसे जियें जाहि तन व्यापै चिन्ता ॥

११ साईं पुर ज्वाला उठी आसमान लों धाय। अन्धहिं पंगुहिं छाँड़ि के पुरजन चले पराय ॥ पुरजन चले पराय अंध यक मंत्र बिचारो। पंगुहिं लीन्हे कन्ध डीठ वाके पगु धारो ॥ कह गिरधर कविराय सुमति ऐसी चलि आई। बिना सुमति को गयो राज रावण की नाईं ॥

१२ सुवा एक दाड़िम के धोखे गयो नारियल खान। कछु खायो कछु खान न पायो फिर लागो पछितान ॥ फिर लागो पछितान बुधि आपनि को रोवा। निर्गु-णियन के साथ गुणिन अपना गुण खोवा ॥ कह

गिरधर कविराय सुनो हो मोरे नोखे। गयो फूट कहीं टूटि चोंच दाड़िम के धोखे॥

१३ सोरठा—शुक ने कह्यो संदेश, सेमर के पग लागिहौं। पग न परे वह देश, जबसुधिआवै फलनकी॥

१४ कुण्डलिया—भूलो चातक आइके घटा धुवाँकी देखि। हौं जानी जस जलजहै बादर श्याम बिशेषि॥ बादर श्याम बिशेषि देखि सोता को धायो। एक समय संकटपरे कौन काके घर आयो॥ कह गिरधर कविराय धुवाँ को यह फल पायो। जो जल को तू गयो सोइ नयनन जल आयो॥

१५ साईं बैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार। बेटा बनिता पँवरिया यज्ञ करावनहार॥ यज्ञ करावन-हार राजमंत्री जो होई। विप्र परोसी वैद्य आपको तपै रसोई॥ कह गिरधर कविराय युगन से यह चलि आई। इन तेरह से तरह दिये बनि आवे साईं॥

१६ बैरी बँधुवा बानियाँ ज्वारी चोर लबार। बट-पारी रोगी ऋणी नगर नारिको यार॥ नगर नारिको

यार भूलि परतीत न कीजै। सौ सौगंदें खायँ चित्त में एक न दीजै॥ कह गिरधर कविराय घर आवै अन गेरी। मुँह से कहै बनाय चित्त में पूरा बैरी॥

१७ बनियाँ अपने बाप को ठगत न लावै बार। निशिबासर जननी ठगे जहाँ लेत अवतार॥ जहाँ लेत अवतार मास दश उदर में राखे। गुरु से करै बिबाद आप पंडित ह्वै भाखे॥ कह गिरधर कविराय बेंचे हरदी और धनियाँ। मित्र जानि ठगि लेहिं जहाँ तक भक्ता बनियाँ॥

१८ आटा में आटा घटै घट दाल में दार। कबहुँक घटिहै घीव महँ तो हमसे ह्वै है रार॥ हमसे ह्वै है रार मारि जूतन जी लेहौं। जाने सकल जहान दाम एको ना देहौं॥ कह गिरधर कविराय बैठिहों तुम्हरे घाटा। पनहिन मूड़ ठठैहों जो कबहुँक घटिहै आटा॥

१९ झूठे मीठे बचन कह ऋण उधार ले जाय। लेत परम सुख ऊपजे लैके दियो न जाय॥ लैके दियो न जाय ऊँच अरु नीच बतावै। ऋण उधारके

रीति माँगते मारन धावैं ॥ कह गिरधर कविराय जानि रहै मन में रूठा। बहुत दिना ह्वै जाय कहे तेरा कागज झूठा ॥

२० सोना लादन पिय गये सूना करि गये देश। सोना मिले न पिय मिले रूपा ह्वै गे केश ॥ रूपा ह्वै गे केश रोय रंगरूप गँवावा। सेजन को बिश्राम पिया बिन कबहुँ न पावा ॥ कहगिरधर कविराय लोन बिन सबै अलोना। बहुरि पिया घर आवै कहाकरिहौं लेसोना॥

२१ मोती लादन पिय गये धुर पटना गुजरात। मोती मिले न पिय मिले युग भर बीती रात ॥ युग भर बीती रात बिरहिनी आनि सतावै। चौंकि परी ब्रजनारि पिया का लिखा न आवै॥ कह गिरधर कविराय हमें ज्यों कृष्ण औ गोपी। आगि लगे वह देश जहाँ उपजति है मोती ॥

२२ जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै संग। जो चाहै लेतो बने तो करि डारु निपंग ॥ तोकरि डारु निपंग भूलि परतीत न कीजै। सौ सौगन्दें खाय चित्त में एक न दीजै॥ कह गिरधर कविराय कबहुँ

बिश्वास न वाकी। शत्रु समान परिहरिय हरिय धन धरती जाकी॥

२३ साईं सत्य न जानिये खेलि शत्रु सँग सार। दाँव परे नहिं चूकिये तुरत डारिये मार॥ तुरत डारिये मार नरद कच्ची करि दीजै। कच्ची होयतो होय मारि जगमें यश लीजै॥ कह गिरधर कविराय युगन याही चलि आई। कितने मिले धधाइ शत्रु को मारिये साईं॥

२४ नदी न छाड़ै तीर को जो बरषा सरसाय। बाढ़ि २ दिन चारिको अपयश जन्म नशाय॥ अप-यश जन्म नशाय वही पाहन को रेखा। बड़ी बड़ाई लहत सदा हम कबहुँ न देखा॥ कह गिरधर कवि-राय नेक नेकी नहिं छोड़ा। बदी किये का होय नदी को तीर न छोड़ा॥

२५ दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान। चंचल जल दिन चारि को ठाउँ न रहत निदान॥ ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै। मीठे बचन सुनाय बिनय सबही की कीजै॥ कह

गिरधर कविराय अरे यह सब घट तौलत। पाहुन निसि दिन चारि रहत सबही के दौलत॥

२६ गुण के गाहक सहस नर बिनु गुण लहै न कोय। जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥ शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन। दोऊ को यक रंग काग सब भये अपावन॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के। बिन गुण लहै न कोय सहस नर गाहक गुण के॥

२७ मित्र बिछोहा अति कठिन मति दीजै करतार। वाके गुण जब चित चढ़े बर्षत नयन अपार॥ बर्षत नयन अपार मेघ सावन झरि लाई। अब बिछुरे कब मिलो कहो कैसी बनिआई॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो बिनती एहा। हे करतार दयालु देहु जनि मित्र बिछोहा॥

२८ साईं तहाँ न जाइये जहाँ आव सो धाय। बरन बिषै जानै नहीं गदहा दाखे खाय॥ गदहा दाखे खाय गऊ पर दृष्टि लगावै। सभा बैठि मुसकाय यही

सब नृप को भावै॥ कह गिरधर कविराय सुनो रे मेरे भाई। तहाँ न करिये बास जहाँ से उठिये साईं॥

२६ गया पिंड जो देइ पितर को अपने तारे। करज बाप का देइ लटे परिवार सँभारे॥ गई भूमि ले फेर दुश्मन सिर खड्ग बजावै। पर उपकार जो करे पुरुष में शोभा पावै॥ सोई वंश सराहिये तल बैरी सब दल-मले। यतना काम जो ना करै पुत्र छोड़ कन्या भले॥

३० सिंहिनि सिखवत सिंह कहँ बेड़ा परे सँभार। जेहि हाथ हाथी हन्यो तेहि मेढक जनि मार॥ तेहि मेढक जनि मार कुलहि जनि दोष लगावै। बरु फाका करि मरै जगत में शोभा पावै॥ कह गिरधर कविराय हँसे जम्बुक औ गीदिनि। समय परे की बात सिंह को सिखवै सिंहिनि॥

३१ हिरना बिरझेउ सिंह से औ झरुखरी चलाय। झारखंड झीना पस्यो सिंहा चले पराय॥ सिंहा चले पराय समय समरत्थ बिचारी। काल काल मालाइ हँसे हँसिक पगधारी॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो मेरे अरना। आजु गई करि जाय सकारे में की हरना॥

३२ बगुला झपट्यो बाजपर बाज रहेउ सिर नाय। दे अँधियारी पगबँध्यो चेटकदे फहराय॥ चेटकदे फहराय धनी बिनु कौन चलावै। बैठि सांकरी डार करे जोजो मन भावै॥ कह गिरधर कविराय सुनो पश्चिम के नकुला। समय पड़ा है आय बाज पर झपटत बकुला॥

३३ फुदकी फुदकत बाज पर बाज रहत है लाज। बहुत दिनन मैं गमकरी तोहिं मारिहौं आज॥ तोहिं मारिहौं आज बाज टरि जाउ यहाँ से। जब मैं करिहौं कोप तबै तुम बचउ कहाँ से॥ कह गिरधर कविराय बाज पर उलरे धुधुकी। समय परे की बात बाज कहँ धिरवे फुदकी॥

३४ पत्ता बड़ २ देखिके चढ़े कुमरण्डो धाय। तरुवर होय तो भार सहि टूटै रेंड़ अरराय॥ टूटै रेंड़ अरराय जाय अंतहि ह्वै फूला। बतिया गई लोभाय कहाँ धों मारग भूला॥ कह गिरधर कविराय यहै नीचन की बाता। अब न जाउँ वहि ठायँ देखिके बड़ २ पाता॥

३५ साईं सब संसार में मतलब को व्यवहार। जब लगि पैसा गाँठ में तब लगि ताको यार॥ तब लगि

ताको यार सङ्ग ही सङ्ग में डोले। पैसा रहत न पास यार मुखसे नहिं बोले ॥ कह गिरधर कविराय जगत यह लेखो आई। बिना गरजकी प्रीति यार बिरला कोइ साईं ॥

३६ दादुरकेर दरेरपर लै फणपति निजशीश। समय आपनोजानके मनहिं न लायो खीश॥ मनहिं न लायो खीश शीशपर बोल्योभाई। पर्यो आपदा आयलाज पत सबै गँवाई ॥ कहि गिरधर कविराय कहो लै आनी आदर। गुण कीमति घटि गई शीश पर बोले दादुर ॥

३७ केचुवा कह नागीन से सुनो न हेतु अचार। हम तुमसे अस रीति है लाख भाँति व्यवहार ॥ लाख भाँति व्यवहार ब्याह सावन में कीजै। क्वार चैतकी घाम कटक दल हमरी छीजै ॥ कह गिरधर कविराय कहाँ से आये हेतुवा। शेषनाग मरि जाय नागिनिहिं ब्याहे केचुआ ॥

३८ कोई भँवर गुलाब तजि गये जो हुरहुर पास। घरिक समान अगारहे करकस आई बास ॥ करकस आई बास आस पासहु से लागै। अपने मन पछि-ताय फेर वाही सँग लागै ॥ कह गिरधर कविराय

कुमति अस फजिहत होई। जोइ बड़ेन को छोड़ नीच घर आवै मोई॥

३९ भँवर भँटै गजाहुमति आँट बहुत रस थोर। आस न पूजै वासरा तासों प्रीति न जोर॥ तासों प्रीति न जोर तोर कुल कमल सँघानी। पपिहा रटै पियास बुन्दजल आवै स्वाती॥ कह गिरधर कविराय बैठ परमल की छैया। बरु मरु जिय तरसाइ जाहु जनि भँवर भँटैया॥

४० दोहा—भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख सुख सही शरीर। जब लगि फूलै केतकी, तब लगि बैठ करीर॥

४१ कुण्डलिया—हीरा अपनी खानि को बार २ पछिताय। गुण कीमत जानै नहीं तहाँ बिकानो आय॥ तहाँ बिकानो आय छेद करि कटि में बाँध्यो। बिन हरदी बिन लोन माँस ज्यों फूहर राँध्यो॥ कह गिरधर कविराय कहाँ लगि धरिये धीरा। गुण कीमत घट गई यहै कहि रोया हीरा॥

४२ रहिये लटपट काटि दिन बरु घामें मा सोय। छाँह न वाकी बैठिये जो तरु पतरा होय॥ जो तरु पतरा होय एक दिन धोखा देहैं। जादिन बहै बयार

टूटि तब जर से जैहैं॥ कह गिरधर कविराय छाँह मोटे की गहिए।पाती सो झरि जाय तऊ छाया मा रहिये॥

४३ पीवे नीर न सरवरो बूँद स्वाति की आस। केहरि तृण नहिं चरिसके जो व्रत करै पचास॥ जो व्रत करै पचास बिपुल गज युत्थ बिदारे। सुपुरुष तजे न धीर जीव बरु कोऊ मारे॥ कह गिरधर कविराय जीव जब लों मरि जीवै। चात्रिक बरु मरि जाय नीर सरवर नहिं पीवै॥

४४ हंस वहाँ रहिये नहीं सरवर गये सुखाय। काल्हि हमारी पीठ पै बगुला धरिहैं पाँय॥ बगुला धरिहैं पाँय यहाँ आदर नहिं ह्वै हैं। जगत हँसाई होय बहुरि मन में पछितैहैं॥ कह गिरधर कविराय दिनै दिन बाढ़ै संसा। याहू से घट जाय तबै का करिहैं हंसा॥

४५ हंसा उड़ि देशहि चले सरवर मीत जुहार। हम तुम कबहूँ भेंटिहैं संदेसन ब्यवहार॥ संदेसन ब्यवहार सदा जलपूरण रहियो। सुख सम्मति धनराज्य सदा चिरजीवित रहियो॥ कह गिरधर कविराय केलिके रही न मंसा। दे अशीश उड़ चले देश अपने को हंसा॥

४६ सैयाँ भये तिलंगवा बाहर चली नहाय। देखि डरो कप्तान कहँ कौन जनारो आय॥ कौन जनारो आय काहधौं पहिरे बाटे। बिन गुनाह तकसीर पिया को ठाढ़े डाँटे॥ कह गिरधर कविराय नवै जस बन्दर भल्ला। तोसदान बन्दूक हाथ में पत्थरकल्ला॥

४७ साईं जग में योगकरि युक्ति न जाने कोय। जब नारीगवनेचली चढ़ी पालकी रोय॥ चढ़ीपालकी रोय जाने नहीं कोई जी की। मन हर्षित ह्वै चली पूजि हैं आसा हीकी॥ कह गिरधर कविराय अरे जनि होउ अनारी। मुँह से कहे बनाय पेट में बिनवै नारी॥

४८ दो०—नवल नारि रोवे नहीं, मन में कहै पुकारि।
जस प्रिय तुम हमसन करो, वैसे करब प्रचारि॥

४६ कुण्डलिया—गढ़पतियन को धर्म है करैं द्वउन को ध्यान। जिमीदार रैतान कर मन को राखो जान॥ मन को राखो जान किले पर तोप चढ़ावो। कोस-कोस को गरद काटि मैदान करावो॥ कह गिरधर कविराय ये राजा जन के ताईं। अस गढ़पति जो होइ ताहि जग जिते न साईं॥

५० नीरा कहै नदीन सन हम तुम एक समान । हमही तुम सन अधिक हैं अधिक हमारो मान ॥ अधिक हमारो मान देखु जब बरषा आवै । बरसे नीर हररायमनइउबरन ना पावै ॥ कहगिरधर कविरायसुनो हो भाई बीरा । समयपरेकीबात नदीकहँ सिखवैनीरा॥

५१ चुगुल न चूके कबहुँ को अरु चूके सब कोइ । बरकन्दाज कमानियाँ चूक उनहुँ से होइ ॥ चूक उनहुँ से होइ जो बाँधे बरछी भल्ला । चूक उनहुँ से होइ पढ़े पंडित औ मुल्ला ॥ कह गिरधर कविराय कलाहू ते नट चूके । चुगुल चौकसीदार ससुर कबहूँ नहिं चूके ॥

५२ मूसा कहै बिलारसों सुन रे जूठ जुठैल । हम निकसत हैं सैर को तुम बैठत हो गैल ॥ तुम बैठत हो गैल कचरि धक्कन से जैहो । तुमहो निपट गरीब कहा घर बैठे खैहो ॥ कह गिरधर कविराय बात सुनि योंही हूसा । वाह दिनन को फेर बिलारी सिखवै मूसा॥

५३ कौआ कहै मराल से कहा जात कह गोत । तुम ऐसे बदरूपिया कहीं न जग में होत ॥ कहीं न

जगमें होत महामेली मलखाना। बैठ कचहरी जाय बेद मरयाद न जाना ॥ कह गिरधर कविराय सुनोहो पांछी हौवा। धन्य मुल्क यह देश जहाँ के राजा कौवा॥

५४ मकरी गिरगिट से कहे का मारति है सान। जो तुम्हरे हिरदेन महँ सो हमहूँ अब जान ॥ सो हमहूँ अब जान करब हम घनके जाला। जहाँ न तुम्हरी डीठितहाँ अब हमरी जाला ॥ कह गिरधर कविराय बात सुनियो हो धाकर। लगे चपेटा मार तहाँ नहिं तहवाँ माकर॥

५५ नयना लगन अपार है पटा अपट ह्वै जाय। गुन गुरु बातन शीलता धीरज धर्म नशाय ॥ धीरज धर्म नशाय फेरि वाही सँग छूटै। छिनक बुद्धि होजाय फेरि वाही सँग जूटै ॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो मोरे भयना। कठिन प्रीति की रीति जहाँ लागे दुइ नयना ॥

५६ नयनाकी नोकें बुरी निकसजात जस तीर। हेरे घाव न पाइये बेधे सकल शरीर ॥ बेधे सकल शरीर वैदका करे बदाई। करिहौ कोटि उपाय घाय नहिं देत

दिखाई॥ कह गिरधर कविराय बिरहिनी हेत हैं चोकैं। समुझ बूझि के चलो बुरी नयनन की नोकैं॥

५७ प्रीति कीजिये बड़न सो समया लावे पार। कायर कूर कपूत हैं बोरि देत मझधार॥ बोरि देत मझधार प्रीति की कौन बड़ाई। पछिताने फिर देहि जगत में अपयश पाई॥कह गिरधर कविराय प्रीति साँची सिख लीजै। व्यवहारी जो होय तऊ तन मन धन दीजै॥

५८ साईं घोड़न आछतहि गदहन आये राज। कौवा लीजै हाथमें दूरि कीजिये बाज॥ दूरि कीजिये बाज राज पुनि ऐसो आयो। सिंह कीजिये कैद स्यार गजराज चढ़ायो॥कह गिरधर कविराय जहाँ यह बूझि बड़ाई। तहाँ न कीजै भोर साँझ उठि चलिये साईं॥

५९ साईं अवसर के पड़े को न सहे दुख द्वन्द। जाय बिकाने डोम घर श्रीराजा हरिचन्द॥ श्रीराजा हरिचन्द करे मरघट रखवारी। किये तपस्वी भेष फिरे

अर्जुन बलधारी॥ कह गिरधर कविराय तपै वह भीम रसोई। को न करै घटि काम परै अवसर के साईं॥

६० कुसमय चले विदेश कहँ काची लाद कुम्हार। वर्षा ऋतु बैरिन भई बादर कीन्हों मार॥ बादर कीन्हों मार इतै उत कछु नहिं सूझै। भर गइ ताल तलाय नदी औ सिंधु का बूझै॥ कह गिरधर कविराय चले पहुँचे दिल पशमा। चला करे मल बाँधि चले का अपना बशमा॥

६१ पपिहा तोहिका मारिहौं छोड़ देहु मोर गाँव। आधी रात को बोलते लैलै पिउको नाँव॥ लैलै पिउ को नाँव ठाँव हमरे नहिं छोड़े। कठिन तुम्हारो बोल जाइ हिरदे में शूलै॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो निरदय पपिहा। नेक रहनदे मोहि चोंच मूँदेरह पपिहा॥

६२ क्यारी केर कसूर का मृगमदबरहा बंध। सींचे नीर गुलाब से लहसुन तजे न गंध॥ लहसुन तजे न गंध रुद्र अगर सँयूता। कबहुँ अहै गजराज कबहुँ शूकर के पूता॥ कह गिरधर कविराय वेद भाखै यह सारी। बीज बोये सो होय कहा कर उत्तम क्यारी॥

६३ लंकापति तुमसे गई ज्यों बसन्त द्रुम पात। सुमति बिभीषण ज्यों दई तब तुम मारी लात॥ तब तुम मारी लात भागि तबही ते आयउ। मिल्यो राम दल जाय काज धौं केतिक साध्यउ॥ कह गिरधर कविराय राम जिय बाढ़ी संका। तपै विभीषण राज अरे पति टूटी लंका॥

६४ साईं गिरधर गिरधस्यो गिरधर २ होय। हनूमान जब गिर धरेउ गिरधर कहत न कोय॥ गिरधर कहत न कोय के ताको किनका धरेऊ। गिरधर गिरधर होय कहत सबको दुख हरेऊ॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो ज्ञानी भाई। थोरे में यश होय यशी पुरुषन को साईं॥

६५ साइ इन्हें न बिरोधिये छोट बड़ो सब भाय। ऐसे भारी बृक्ष को कुल्हरी देत गिराय॥ कुल्हरी देत गिराय मार के जमी गिराई। टूक २ के काटि समुद्र में देत बहाई॥ कह गिरधर कविराय फूट जेहि के घर जाई। हिरणकशिपु अरु कंस गये बलि रावण भाई॥

६६ लाठी में गुण बहुत हैं सदा राखिये संग। गहरी नदि नारा जहाँ तहाँ बचावे अंग॥ तहाँ बचावे अंग झपटि कुत्ता कहँ मारे। दुश्मन दावागीर होय तिनहूँको झारे॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो धुरके बाठी। सब हाँथयारन छाड़ हाथ महँ लीजै लाठी॥

६७ कमरी थोरे दामकी आवै बहुतै काम। खासा मलमल बाफता उनकर राखे मान॥उनकर राखे मान बूँद जहँ आड़े आवै। बकुचा बाँधे मोट रातको झारि बिछावै॥ कह गिरधर कविराय मिलत है थोरे दमरी। सब दिन राखे साथ बड़ी मर्यादा कमरी॥

६८ जुगनू बाल सूय सो हम बिन जग अँधियार। दिनके ठाकुर तुम भये रात के हम कोतवार॥ रातके हम कोतवार जुगुनु असनाम हमारो। तुम आकाशमें रहो हमारो पृथ्वी द्वारो॥ कह गिरधर कविराय सुनो हो प्यारे जुगुनू। ऐंड़ि ऐंड़ि बतलाहि सूर्य के सन्मुख जुगनू॥

६९ बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछिताय। काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥ जग में होत हँसाय

चित्तमें चैन न पावै। खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै॥ कह गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे। खटकत है जिय माँहि कियो जो बिना बिचारे॥

७० बीती ताहि बिसारि दे आग की सुधिलेइ। जो बनिआवे सहजमें ताही में चितदेइ॥ ताहीमें चितदेइ बात जोई बनिआवै। दुर्जन हँसे न कोइ चित्तमें खता न पावै॥ कह गिरधर कविराय यहै करु मनकी प्रीती। आगे को सुख होय समुझि बीती सो बीती॥

७१ साइ अपने चित्त की भूल न कहिये कोय। तब लग मनमें राखिये जबलग काज न होय॥ जब लग काज न होय भूल कबहूं ना कहिये। दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे होय रहिये॥ कह गिरधर कविराय बात चतुरन की ताईं। करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं॥

७२ साइ अपने भ्रात को कबहुँ न दीजै त्रास। पलक दूरि नहिं कीजिये सदा राखिये पास॥ सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं दीजै। त्रास दियो

लंकेश ताहि की गति सुन लीजै ॥ कह गिरधर कविराय रामसो मिलियो जाई। पाय विभीषण राज्य लंकपति बाज्यो साईं ॥

७३ साईं नदी समुद्र को मिली बड़प्पन जानि। जाति नास भयो मिलत ही मान महत की हानि ॥ मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजै। जल खारा ह्वै गयो ताहि कहो कैसे पीजै ॥ कह गिरधर कविराय कच्छ औ मच्छ सकुचाई। बड़ी फजीहत होय तबो नदियन की साइ ॥

७४ साईं सन औ दुष्टजन इनको यहै सुभाव। खाल खिचावे आपनो परबन्धन के दांव॥ परबन्धनके दांव खाल अपनी खिचवावै। मूड़ काटिके फबै तऊ वह बाज न आवै॥ कह गिरधर कविराय जरै आपनी कटाई। जल में परि सड़ गये तऊ छाड़ी न खुटाई ॥

७५ साईं समय न चूकिये यथाशक्ति सन्मान। को जाने को आइ है तेरी पौरि प्रमान ॥ तेरी पौरि प्रमान समय असमय तकि आवै। ताको नयनन

खोलि अंक भरि हृदय लगावै॥ कह गिरधर कविराय सबै यामें सुधि आई। सीतल जल फल फूल समय जनि चूको साई॥

७६ साईं ऐसी हरिकरी बलिके द्वारे जाय। पहिले हाथ पसारि के बहुरि पसारे पांय॥ बहुरि पसारे पांय मतो राजा ने बतायो। भूमि सबै हरिलई बाँधि पाताल पठायो॥ कह गिरधर कविराय राउ राजन के ताईं। छलबल करि प्रभु मिले ताहि का तिष्ठै साईं॥

७७ साईं अगर उजार में जात महा पछताय। गुण ग्राहक कोउ नाहिं है जाहि सुबास सुहाय॥ जाहि सुबास सुहाय सुने बन कोऊ नाहीं। कै दीगर कै हिरन सुनो कछु जानत नाहीं॥ कह गिरधर कविराय बड़ा दुख यहै गुसाईं। अगर ओक को राख भई मिलि एकै साईं॥

७८ साईं हंस न आवहीं बिनु जल सरवर पास। निरजल सरवर ते डरे पंछी पथिक उदास॥ पंछी पथिक उदास छाँह विश्राम न पावै। जहाँ न प्रफुलित

कमल भँवर तहँ भूलि न आवै॥ कह गिरधर कविराय जहाँ तक बूझि बड़ाई। तहाँ न करिये साँझ प्रातही चलिये साईं॥

७९ नैना तब परबश भये उत्तम गुण सब जाय। वे फिरिफिरि चोरी करैं ये फिरिफिरि लपटाय॥ ये फिरिफिरि लपटाय नेत्र बहुरै भरि आवै। खान पान सब त्याग रात दिनही दुख पावै॥ कह गिरधर कविराय सुनो तुम श्रवण बिनैना। लोग दई अकलंक परे जब परबश नैना॥

८० साईं सुमन पलास पर सुवा रह्यो जो आय। लाल कली सो चोंच पर मधुकर बैठो जाय॥ मधुकर बैठो जाय सुवा तत्काल बचायो। कोटि कष्ट परि पाय मारि करि छूटन पायो॥ कह गिरधर कविराय वेगि घर बजै बधाई। दीजै बिदा पलास जियत घर जैये साईं॥

८१ साईं तेली तिलन सो किया नेह निर्बाह। छाँटि फटक ऊजर करादई बड़ाई ताहि॥ दई बड़ाई ताहि पंचमहँ सिगरे जानी। दे कोल्हू में पेरि करी एकत्तर घानी॥ कह गिरधर कविराय यही माया

प्रभुताई । माया सब से भली मानु मति मेरी साईं ॥

८२ साईं सुवा प्रवीन अति बानी बदन बिचित्र । रूपवन्त गुण आगरे राम नाम सो चित्त ॥ राम नाम सो चित्त और देवन अनुराग्यो । जहाँ २ तुम गयो तहाँ तुम नीको लाग्यो ॥ कह गिरधर कविराय सुवा चूक्यो चतुराई । बृथा किया बिश्वास सेय सेमर को साईं ॥

८३ गदहा थोरे दिनन में खूब खाइ इतरात । अफरान्यो मारन कह्यो ऐराकी को लात ॥ ऐराकी को लात देत शंका नहिं आने । ऐराकी सँग रहे ताहि कोऊ नहिं जाने ॥ कह गिरधर कविराय रहैगा तौलौं जबहा । ऐराकी की लात सहेगा कैसे गदहा ॥

८४ महुआ नित उठि दाख से करत मसलहत आय । हम तुम रूखे एकसे हूजत है रसराय ॥ हूजत है रसराय बिलग जनि याको मान्यो । मधुर मिष्ट हम अधिक कछुक जियसे जनि जान्यो ॥ कह गिरधर कविराय कहल साहब से रहुआ । तुम नीचे फल बेलि बृक्ष हम ऊँचे महुआ ॥

८५ गुलतुर्रा सो जाय के वार्ता करत करील। हम तुम सूखे एक सो पूछ देखिये भील॥ पूछ देखिये भील भेद जो जानै मेरो। ताहू पूछ बुलाय भेद जो जानै तेरो॥ कह गिरधर कविराय नातरि करिहौं हुर्रा। अब जनि भूलि गुमान करो फिरि हो गुलतुर्रा॥

८६ हुक्का बांधो फेंट में नैचा गहि लइ हाथ। चले राह में जात हैं लिये तमाकू साथ॥ लिये तमाकू साथ गैल को धंधा भूल्यो। गइ सब चिन्ता भूलि आग देखत मन फूल्यो॥ कह गिरधर कविराय यमन कर आया रुक्का। जिय ले गयो जो काल हाथ में रहिगो हुक्का॥

८७ पगड़ी सूही बाँधि के भयो सिपाही लोग। घास बेंचि के खात हैं भयो गाँव में रोग॥ भयो गाँव में रोग पूछ निबरी देखावहु। मन में बड़े हो छैल राग पनघट पर गावहु॥ कह गिरधर कविराय मही तुमते है चूही। भये सिपाही आनि बाँधि के पगड़ी सूही॥

८८ पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम। दोनों

हाथ उलीचिये यही सयानो काम ॥ यही सयानो काम राम को सुमिरन कीजै । परस्वारथ के काज शीश आगे धरि दीजै ॥ कह गिरधर कविराय बड़न के याही बानी । चलिए चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ॥

८९ राजा के दरबार में जैये समया पाय । साईं तहाँ न बैठिये जहँ कोउ देय उठाय ॥ जहँ कोउ देय उठाय बोल अनबोले रहिये । हँसिये ना हहराय बात पूछेते कहिये ॥ कह गिरधर कविराय समय जो कीजै काजा । अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥

९० कृतघन कतहुँ न मानहीं कोटि करै जो कोय । सर्बस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ॥ तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै । काम काढ़ि चुप रहै फेरि तिहिं नहिं पहिचानै ॥ कह गिरधर कविराय रहत तिनही निर्भय मन । मित्र शत्रु ना एक दाम के लालच कृतघन ॥

बैताल का छप्पै ।

प्रथम लगन जबही लगी तबहि कछु और न सूझे। सुध बुध गई हेराय तबहि सम्मुख हो जूझे॥ बिरह तेग तलवार सैल अति बज्जर भारी। तपत रहे दिन रैनि घाव अन्तिम तनकारी॥ नित मरना नित जिवना सो रैनि पलट को दीजिये। बैताल कहै सुन विक्रम जो मित्र कहै सो कीजिये॥

यश कारण बलिराज बावन को तिरलोक दिये॥ यश कारण राजा करण कमठ को कछु न शोच किये॥ यश कारण जगदेव शीश कंकालिहि अर्प्यो। मोरध्वज यश हेतु स्वकर शोणित सुत तर्प्यो॥ यश अजर अमर बैताल भनत जो यश अमर पदाइये। अश्वपति गजपति नृपति तो रिसकरि यश न गँवाइये॥

कमलपत्र दलमूल और जात जल चरकूँ। महिक महिक ना गनूँ जहर की डली न राखूँ॥ किते मूसरी फार आठ मुट्ठी कर थामू। नरदम मारूँ चरन नाम गोविन्द राकूँ॥ सुन सुरता सुन रावरे

कभी न तेजसु तुम चढ़ो। बैताल कहै सुन विक्रम आठ पहर जूमत रहो॥

बचन तो ऐसे दीजिये जैसे दशरथ भान। पिता पुत्र दोनों गये बचन न दीन्हो जान॥ बचन छलौ बलिराज बचन कौरव बन खण्डो। बचन करन लगे कोश बचन कौरव बन मण्डो॥ बचन लाग हरिश्चन्द्र नीच घर नारि समर्प्यो। बचन लाग जगदेव शीश कंकालिहि अर्प्यो॥ बार २ बैताल भनत तो कागहि जिह्वा काढ़िये। जर जाय लच्छ विक्रम तनय तो बोलि बचन मत पलटिये॥

मरै सूम यजमान मरै कमचालक टट्टू। मरै कर्कशा नारि मरै वो खसम निखट्टू॥ पुत्र वही मर जाय जो कुल में दाग लगावै। मित्र वही मर जाय समय पर काम न आवै॥ बे नियाव राजा मरै इनके मरे न रोइये। बैताल कहै सुन विक्रम तबै नींद भर सोइये॥

शशि बिनु सूनो रैनि ज्ञान बिन हिरदय सूनो। कुल सूनो बिन पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो॥ गज

सूनो बिन दन्त ललित बिनु शायर सूनो। बिप्र सुनो बिन बेद बास बिन पुहपर सूनो॥ सूना राज सावन्त बिन सो घटा सूनो बिन दामिनी। कह बैताल सुन विक्रम सो पति बिन सूनो कामिनी॥

दबकर पढ़ें कवित्त पास मोची तुक जोरे। मलहा पढ़े कवित्त नाव गहिरे में बोरे॥ भुजवा पढ़े कवित्त जीव दसबीस जरावै। धोबी पढ़े कबित्त छानकर कलपचढ़ावैं॥ कुछ २ कवित्त नाऊ पढ़े सो बार मूड़ि आगे धरे। बैताल कहे सुन विक्रम सो अब कवित्त सब नर पढ़े॥

हाथी चंचल होय झपट मैदान दिखावै। राजा चंचल होय मुलक को सर कर लावै॥ पंडित चंचल होय सभा उत्तर दे आवै। चंचल होय तुरंग सवारे युद्ध जितावै॥ ये चारो चंचल भये सो राजा पंडित गज तुरी। बैताल कहै सुनु विक्रम तो एक नारि चंचल बुरी॥

पहिरे झिगुले पटा पाग सिर टेढ़ी बाँधे। घर में तेल न लोन प्रीति चेरी सो साधे॥ बातन में गहलेय युद्ध आँखिन नहिं देखै। अवघट घट में जाय त्रिया सो लेखा

मांगै ॥ जानत हैं सो जानते सब दुख सुख साथी कर्म के।
बैताल कहै सुनु विक्रम तो ये लक्षण नामर्द के ॥

मर्द शीश पर नवै मर्द बोली पहिचाने। मर्द खिलावै खाय मर्द चिन्ता नहिं माने ॥ मर्द देय अरु लेय मर्द को मर्द बचावै। गहिरे सकरे काम मर्द के मर्दै आवै॥ पुनि मर्द उनहीं को जानिये जो दुख सुख साथी कर्म के।
बैताल कहै सुनु विक्रम तो ये लक्षण सब मर्द के ॥

चोर चुप्पकर रहे जो पर घर ढुक्के। जोरू चुपकर रहै पिया बिन बोल न सक्के ॥ चेरी चुपकर रहे शील साहेब को मानै। गूँगा चुपकर रहे बात एको नहिं जानै ॥ वृक्ष और जलजीव सब पवन साथ उड़ते रहैं।
बैताल कहै सुनु विक्रम कोइ २ कवि कुछ २ कहैं ॥

॥ इति ॥

धार्मिक तथा अन्य पुस्तकें